इकाई 14 अबुल फ़ज़ल*

इकाई की रूपरेखा

14.0 उद्देश्य

14.1 प्रस्तावना

14.2 अबुल फ़ज़ल के दार्शनिक प्रेरणा-स्रोत

14.3 अबुल फ़ज़ल की इतिहास के संबंध में अवधारणा

14.4 अबुल फ़ज़ल का इतिहास के स्रोतों के प्रति दृष्टिकोण

14.5 अबुल फ़ज़ल के लेखन में पूर्वाग्रह

14.6 अबुल फ़ज़ल के लेखन में इतिहास के प्रति तार्किक और धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण

14.7 अबुल फ़ज़ल के लेखन में समय की अवधारणा

14.8 धर्म के संबंध में अबुल फ़ज़ल के विचार

14.9 अबुल फ़ज़ल की *सुलह-ए कुल* की अवधारणा

14.10 अबुल फ़ज़ल की संप्रभुता की अवधारणा

14.11 सारांश

14.12 शब्दावली

14.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

14.14 संदर्भ ग्रंथ

14.15 शैक्षणिक वीडियो

14.0 उद्देश्य

यह इकाई अबुल फ़ज़ल की इतिहास-संबंधी अवधारणा और उसके ऐतिहासिक दृष्टिकोण पर विचार करती है। इस इकाई के अध्ययन के बाद आप जानने में समर्थ होंगेः

- अबुल फ़ज़ल की इतिहास के संबंध में अवधारणा,
- इतिहास लेखन के प्रति उसका दृष्टिकोण,
- *अकबरनामा* के लेखन में अबुल फ़ज़ल द्वारा प्रयुक्त स्रोतों की प्रकृति तथा उनके पैटर्न,
- अबुल फ़ज़ल के स्वयं के पूर्वाग्रह,
- अबुल फ़ज़ल की *सुलह कुल* की अवधारणा,
- अबुल फ़ज़ल के लेखन में समय का निरूपण, और
- धर्म के संबंध में अबुल फ़ज़ल के विचार।

14.1 प्रस्तावना

अबुल फ़ज़ल (1551-1602) भारत के महानतम इतिहासकारों में से एक था, वह आधिकारिक रूप से नियुक्त एक इतिहासकार, एक विचारक था, तथापि वह एक परंपरागत क़िस्म का आधिकारिक इतिहासकार नहीं था। वह एक प्रतिभाशाली विद्वान था किंतु 'श्रेष्ठता की मनोग्रंथि से पीड़ित' था जिसने उसे अभिमानी और अहंवादी बना दिया था।

* प्रो. आभा सिंह, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

अबुल फ़ज़ल ने शाही सेवा में *इबादतख़ाने* की स्थापना (1575) से एक वर्ष पूर्व प्रवेश पाया था। अबुल फ़ज़ल की सर्वाधिक प्रख्यात रचना *अकबरनामा* (*c.* 1595) को अकबर द्वारा जारी 1589 के आदेश के तहत लिखा गया था। इसमें आदम से लेकर अकबर के शासनकाल के 46वें वर्ष तक की घटनाओं का विवरण है। *आईन-ए अकबरी*, जो साम्राज्य का एक सांख्यिकीय विवरण है, एक विवरणिका/गज़ेटियर के रूप में लिखा गया था, और मूलतः इसका तीसरा भाग था (बाद में आरंभिक 17वीं शताब्दी में इसे एक अलग ग्रंथ के रूप में देखा जाने लगा); मूलतः इसे *आईनहा-ए मुक़द्दस-ए शाही* के रूप में जाना जाता था और बाद के समय में आरंभिक 17वीं शताब्दी से इसे *आईन-ए अकबरी* कहा जाने लगा। उसने *मुनाजात* की रचना भी की जो अबुल फ़ज़ल द्वारा ख़ुदा के आह्वान पर केंद्रित है। उसने *महाभारत* के फ़ारसी अनुवाद *रज़्मनामा* की प्रस्तावना भी लिखी। अपनी इस प्रख्यात कृति के अलावा अबुल फ़ज़ल के पत्र भी उपलब्ध हैं, जिन्हें उसकी मृत्यु के बाद संकलित किया गया था – *मुकातबात-ए अल्लामी* (उसके भतीजे अब्दुस समद द्वारा संकलित) तथा *रुक़्क़ात-ए अबुल फ़ज़ल* (अबुल फ़ज़ल के अन्य भतीजे नूरुद्दीन मुहम्मद द्वारा संकलित)।

अबुल फ़ज़ल ने *अकबरनामा* को लिखने के कार्य को सात वर्षों में पूरा किया और अंततः 1598 में इसे अकबर के समक्ष प्रस्तुत किया। इस काल के दौरान उसने इसके प्रारूप को पाँच बार संशोधित किया जो इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि प्रत्येक शब्द, जिसका लेखक ने इसमें प्रयोग किया है, उसका सोच-समझ कर चयन किया गया था। अबुल फ़ज़ल एक अभिजात्य था जो आमजनों की ज़रूरतों के हिसाब से नहीं लिख रहा था। वह स्वयं कहता है, 'मुझे भीड़ से क्या लेना है?'(निज़ामी 1982: 149)।

14.2 अबुल फ़ज़ल के दार्शनिक प्रेरणा-स्रोत

अबुल फ़ज़ल के विचारों पर उसकी परिस्थितियों का गंभीर प्रभाव पड़ा था। अबुल फ़ज़ल की प्रारंभिक शिक्षा उसके पिता और अपने समय के महान् विद्वान शेख़ मुबारक के संरक्षण में हुई थी। अबुल फ़ज़ल का परिवार **महदवी** विचारों से अत्यधिक प्रभावित था। अबुल फ़ज़ल के पिता शेख़ मुबारक की महदवियों के साथ सद्भावना (महदवी संतों शेख़ अलाई तथा मियाँ अब्दुल्लाह नियाज़ी के साथ) ने इस परिवार को *उलमा* के कोपभाजन का शिकार बनाया। इस परिवार को भगोड़ों की तरह जीवन बिताना पड़ा तथा बीस वर्षों के लंबे अंतराल तक इस परिवार को *उलमा* द्वारा सताया जाता रहा। मख़दूम-उल मुल्क अब्दुल्लाह सुल्तानपुरी ने उन्हें प्राप्त अनुदान को ज़ब्त करने का आदेश भी दिया था। इन सबने अबुल फ़ज़ल के मन में रूढ़िवादिता के प्रति कड़वाहट पैदा कर दी थी।

अबुल फ़ज़ल ने अपनी दार्शनिक अंतर्दृष्टि तथा प्रेरणा विभिन्न स्रोतों और विद्वानों से प्राप्त की थी। उसकी दार्शनिक नींव के पीछे इब्न सीना (अविसीना; उसका परिधीय दर्शन), ईरान की **इशराक़ी परम्परा** (शेख़ शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी मक़तूल), इब्न अल-अरबी के विचार तथा दर्शन, इमाम ग़ज़ाली, 'राजाओं के लिए परामर्श-संबंधी ग्रंथ' ('Mirror of Princes') फ़िरदौसी का *शाहनामा*, हकीम फतउल्लाह शिराज़ी, तथा जिलानी बँधुओं के विचार थे। भारतीय परंपराओं में वह *महाभारत*, *धर्मशास्त्रों* और *कलिल वा दिम्ना* (*पंचतंत्र*) से प्रभावित था। अबुल फ़ज़ल इब्न अल-अरबी के *वहदत-उल वुजूद* (अस्तित्व की एकता) पर विश्वास रखता था। उसने नसीरुद्दीन तूसी की *अख़लाक-ए नासिरी* से भी बहुत कुछ ग्रहण किया था। इरफ़ान हबीब महमूद पासिख़्वानी (मृ. 1427-1428), जो **वाहिदिया/नुक़्ताविया** पंथ के संस्थापक थे, के संभावित प्रभाव को भी अबुल फ़ज़ल के विचारों पर देखते हैं। हरबंस मुखिया (2020: 65-71) यह भी मानते हैं कि अबुल फ़ज़ल पर संत-कवि कबीर के विचारों का गहरा प्रभाव था जिन्हें वह *मुवाहिद* (एकेश्वरवादी) कहता है।

14.3 अबुल फ़ज़ल की इतिहास के संबंध में अवधारणा

इतिहास के संबंध में अबुल फ़ज़ल का दृष्टिकोण अकबर की इतिहास-संबंधी अवधारणा से निर्देशित था। अकबर के भीतर स्वयं की उपलब्धियों तथा नाम को अमर बना देने की गहरी आकांक्षा थी। इस प्रकार तैमूरी परम्परा का अनुसरण करते हुए उसने उन सभी से, जो अतीत के राजनीतिक विकासक्रमों से संबंधित थे, अपने संस्मरणों को लिखने के लिए कहा। इस प्रक्रिया में गुलबदन बेग़म (*हुमायूँनामा*), बायज़िद बयात (*तज़किरा-ए हुमायूँ वा अकबर*), जौहर आफ़ताबची (*तज़किरात-उल वाक़ियात*) और अब्बास ख़ान सरवानी (*तारीख-ए शेरशाही; तुहफ़ात-ए अकबरशाही*) ने अपने संस्मरणों की रचनाएँ

कीं। अकबर की सहस्राब्दिक परियोजना *तारीख़-ए अल्फ़ी* के संबंध में विशेष निर्देश दिए गए थे। अकबर ने इस *तारीख़* को पूरा करने का काम विद्वानों के एक समूह को सौंपा था, जिनसे *हिजरी* के बजाय *रेहलत* (*इलाही*) संवत का प्रयोग करने, भाषा को सरल रखने और सुल्तानों द्वारा सत्ता हासिल करने में परिणत होने वाली परिस्थितियों की व्याख्या करने को कहा गया था। लेकिन, इन निर्देशों में संशोधन देखने को मिलता है, जब अबुल फ़ज़ल से इतिहास लिखने को कहा गया। उसने कई विद्वानों द्वारा एक ग्रंथ तैयार करने की समस्याओं का अनुभव किया तथा यह कार्य अकेले ही अबुल फ़ज़ल को सौंप दिया गया। इसके अतिरिक्त आँकड़ों के संग्रह तथा संकलन के लिए अबुल फ़ज़ल को एक संपूर्ण सचिवालय उपलब्ध करवाया गया। अकबर, जो *हिजरी* संवत को तरज़ीह नहीं देता था, ने अबुल फ़ज़ल से इसके प्रयोग को लेकर आग्रह नहीं किया। इसके अतिरिक्त भाषा की सरलता के संबंध में भी उस पर कोई सीमा नहीं लगाई गई। दिलचस्प रूप से, अबुल फ़ज़ल स्वयं आलंकारिक शब्दाडंबर से दूर हटने का दावा करता है, हालांकि भाषा की सरलता का उसका दावा शायद ही उचित ठहरता है।

इस पृष्ठभूमि में अबुल फ़ज़ल ने अपनी महान् कृति की रचना शुरू की। *अकबरनामा* को कलमबद्ध करने के उद्देश्य पर टिप्पणी करते हुए निज़ामी (1982: 146) कहते हैं:

> विषय के प्रति अपने दृष्टिकोण के निर्धारण में अबुल फज़ल के लिए जो सर्वाधिक प्रमुख कारक था वह था कि इतिहास के उद्देश्य और दायरे तथा इतिहासकार की भूमिका के संबंध में उसके स्वामी (अकबर) का क्या विचार है ....

अबुल फ़ज़ल, 'अपने नायक (अकबर) को एक परमश्रेष्ठ इंसान तथा आदर्श राजा के रूप में प्रस्तुत करने की उत्कट इच्छा में अक्सर तर्क, तटस्थ रवैये और उचित सीमाओं को ध्यान में रखने में असफल रहता है। इसने उसके विवरण को न केवल पक्षपातपूर्ण बनाया है बल्कि कई बार यह मात्र प्रशस्ति के निम्न स्तर पर पहुँच जाता है' (सिद्दीक़ी 2018: 130)।

अबुल फ़ज़ल के समय इतिहास लेखन की मंगोल व तैमूरी, दोनों, परम्पराएँ, तथा भारतीय परम्परा प्रचलन में थीं। अबुल फ़ज़ल ने मंगोल परम्परा को अपनाया जो अपने वाक्य-विन्यास में अत्यधिक अलंकृत शैली की थी। यह अकबर के *तारीख़-ए अल्फ़ी* के संबंध में दिए गए निर्देशों के विपरीत था, जहाँ उसने भाषा की सरलता को लेकर निर्देश किया था। अक्सर ही इसका परिणाम वास्तविक विचार के अर्थ के धूमिल पड़ जाने में निकलता है।

दरबार तथा शिविरों के इर्द-गिर्द केंद्रित रहने वाला फ़ारसी इतिहास लेखन भी अबुल फ़ज़ल के लिए अपर्याप्त था, अतः उसने समान रूप से अरबी इतिहास लेखन की परम्परा का सहारा लिया, जिसमें जनता को केंद्र में रखा जाता था, तथापि अरबी इतिहास लेखन की उसके द्वारा स्वीकार्यता 'मात्र आंशिक और सीमित ही थी, जनता को इस इतिहासकार (अबुल फ़ज़ल) के अध्ययन के मनोहारी दायरे में प्रवेश अधिकार-पूर्ण रूप से नहीं मिला था, जैसा कि अरब इतिहासकारों ने किया था, बल्कि यह उसकी आवश्यकता थी क्योंकि उनके बिना अकबर की बहुमुखी गतिविधियाँ अपूर्ण तथा नीरस ही रह जातीं' (निज़ामी 1982: 153)। उसके विवरण में अपने समय के संतों के संबंध में भी विस्तृत चर्चा का अभाव है।

उसने भारतीय परम्परा की एकता और निरंतरता के लिए प्रयास किया और इसके साथ ही भारत को वैश्विक रूप से ईरान, मावराउन्नहर (Transoxiana) तथा तुर्की के साथ जोड़ने का प्रयास भी किया।

इतिहास के दायरे को विस्तृत करते हुए इसमें अपने समय की राजनीतिक-सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक प्रवृत्तियों के विश्लेषण को भी उसके द्वारा स्थान प्रदान किया गया है।

उसकी स्वयं इतिहास और इतिहासकार के प्रति एक परिभाषित दृष्टि थी, उसके अनुसार इतिहास कालक्रम के अनुरूप घटनाओं का विवरण है और जो ऐसा करने में दक्षता रखता है वह एक इतिहासकार है। उसने इतिहास को 'दुनिया की घटनाओं को कालानुक्रम की व्यवस्था में दर्ज़ करने' के रूप में देखा (रिज़वी 1975: 225)। उसकी कृति 'भारतीय मध्यकालीन ऐतिहासिक लेखन में युगांतरकारी कृति बन गई है' (मुखिया 2017: 88)।

बोध प्रश्न-1

1) वे कौन सी परिस्थितियाँ थीं जिनका अबुल फ़ज़ल के विचारों को आकार देने में गहरा प्रभाव पड़ा था?

.....

.....

.....

2) अबुल फ़ज़ल की मुख्य कृतियों का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

3) अबुल फ़ज़ल की इतिहास-संबंधी अवधारणा के संबंध में संक्षेप में बताइए।

.....

.....

.....

14.4 अबुल फ़ज़ल का इतिहास के स्रोतों के प्रति दृष्टिकोण

अबुल फ़ज़ल को आँकड़ों के संग्रह तथा उचित जाँच-परख के बाद सांख्यिकीय आँकड़ों के सतर्कतापूर्ण और श्रमसाध्य उपयोग के क्षेत्र में अग्रणी माना जाता है। उसने तथ्यों के संग्रह के लिए नई प्रकार की पद्धति को अपनाया। उसकी *आईन* इस प्रकार के सांख्यिकीय आँकड़ों को प्रस्तुत करने के संदर्भ में उच्च स्थान रखती है। उसने विस्तृत रूप से आधिकारिक दस्तावेज़ों के इस्तेमाल के साथ ही मौखिक विवरणों को भी समाहित किया है। इस कार्य के लिए, जैसा कि बायज़ीद बयात दर्ज करता है, उसे लिपिकों (लेखकों) का एक पूरा सचिवालय उपलब्ध करवाया गया था। उसने घटनाओं को कालक्रम के अनुरूप व्यवस्थित करने और उनके भौगोलिक संदर्भ में अत्यधिक सावधानी बरती थी, और '12 *सूबों* का उसका विवरण' प्रत्येक *सूबे* (प्रांत) के संबंध में प्रशासनिक और राजस्व-संबंधी जानकारी का विस्तृत वर्णन पेश करता है। यह एक ऐसा प्रशासनिक दस्तावेज़ है जिसमें साम्राज्य की भौगोलिक और राजस्व-संबंधी जानकारियां दी गई हैं। लेकिन, *आईन* मात्र आँकड़ों का संग्रह है और संस्थानों के क्रमिक विकास पर दृष्टिपात करने में यह असफल रही है। उसकी *आईन* अक्सर एक 'आदर्श' चित्रण प्रस्तुत करती है, बजाय कि प्रशासनिक संस्थानों के 'वास्तविक' कार्य संचालन के विषय में बताने के। 'इन जानकारियों को किसी रेलवे समय-सारणी या किसी विभागीय प्रतिवेदन के रूप में पढ़ा जा सकता है जिसमें उस सबका अभाव है जो हमें लोगों की वास्तविक परिस्थितियों के विषय में बता सकता है तथा उनके जीवन के रूपों, उद्देश्य तथा अर्थ के संबंध में किसी प्रकार की कोई अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है' (सिद्दीकी 2018: 148)। इसमें आमजनों के कृत्यों, विश्वासों, सामाजिक आदतों तथा व्यवहारों और अंधविश्वासों के विवरण का भी अभाव है। इस प्रकार वह समाज की कथा प्रस्तुत करने में असफल रहता है, इसके बजाय वह इसे मात्र 'अकबर की कथा' के रूप में बदल देता है।

अबुल फ़ज़ल ने 'मुश्किल से ही उन स्रोतों का उल्लेख किया है जिनसे उसने किसी विशेष जानकारी को ग्रहण किया है' (मुखिया 2017: 66)। इसी प्रकार का आरोप उसके अंग्रेज़ी अनुवादक जैरेट ने लगाया है कि वह अन्य लेखकों से शब्दशः विवरण ग्रहण करते हुए भी शायद ही कभी उनके उद्धरणों को देता है, बिना किसी भय के और चोरी करने के आरोप के प्रति लापरवाह रहते हुए' (मुखिया 2017: 68 से उद्धृत)। यहाँ जैरेट अबुल फ़ज़ल पर *आईन* के तीसरे भाग में *अल-बिरूनी* के ग्रंथ के रशीदउद्दीन द्वारा किए गए फ़ारसी अनुवाद से नकल करने का आरोप लगाता है। इसी प्रकार अबुल फ़ज़ल ने हिंदू दर्शन तथा रीतियों के संबंध में विश्वनाथ कविराज के *साहित्य दर्पण* तथा *मनुस्मृति* से भी नकलें उतारी हैं। ऐसे ही *सरकार* काबुल के संबंध में उसका खंड अधिकांशतः बाबर के विवरण से लिया गया है (मुखिया 2017: 68)। उसने हुमायूँ के शासनकाल के संबंध में भी जौहर आफ़ताबची (*तज़किरात-उल वाक़ियात*) और बायज़ीद बयात (*तज़किरा-ए हुमायूँ वा अकबर*) से विस्तृत उद्धरणों

को शामिल किया है। कई बार उसने आधिकारिक दस्तावेज़ों के साथ छेड़छाड़ भी की है, उनमें से कुछ शब्दों को हटाकर या जोड़कर। अबुल फ़ज़ल द्वारा खुरासान के *सूबेदार* के लिए शाह तहमस्प के *फ़रमान* के संदर्भ में, सर्वप्रथम वह ईरानी शाह द्वारा अपने पिता को दी गई जन्नत आशियानी की उपाधि को छोड़ देता है और बाद में ऐसे तीन व्यक्तियों के नाम उसमें जोड़ देता है जो हुमायूँ के मनोरंजन के लिए उससे मिले थे। इसके अतिरिक्त, उसने अपने ग्रंथ में *महज़र* के प्रारूप को शामिल नहीं किया है जिसे स्वयं उसके पिता शेख़ मुबारक ने तैयार किया था। इसी प्रकार उसने अपने अंतिम प्रारूप से टोडरमल की विज्ञप्ति (Memorandum) को हटा दिया था और उसका केवल सार मात्र ही प्रस्तुत किया है।

14.5 अबुल फ़ज़ल के लेखन में पूर्वाग्रह

शर्मा (1948: 44) तर्क देते हैं कि, 'अबुल फ़ज़ल अकबर को प्रभावित करना तो दूर, संभवतः स्वयं अकबर के आदर्शवाद को आत्मसात कर, उसके यथार्थकरण में स्वयं एक युक्ति बन गया था।' अबुल फ़ज़ल के ऐतिहासिक दृष्टिकोण में एक मुख्य कारक अकबर की पसंद या नापसंद थी। इस प्रकार उसका विवरण पूरी तरह से अकबर के व्यक्तित्व के चारों ओर घूमता है जो 'अपनी संपूर्णता में मौलिक तो है किंतु कष्टपूर्ण रूप से अवास्तविक है' (निज़ामी 1982: 150)। उसने अकबर को एक 'बादशाह-पैगंबर' के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया, जिसे 'आध्यात्मिक महानता' से नवाज़ा गया था। उसने अकबर की देवत्व से निकटता को प्रस्तुत किया। उसके द्वारा इलाही संवत की घोषणा एक 'दैवीय अभिप्रेरणा' थी। इस प्रक्रिया में वह, जो *उलमा* तथा धार्मिक अंधविश्वासों के प्रति आलोचक था, स्वयं इसी प्रकार की तुलनाओं में फँस गया: वह अकबर के जन्म का वर्णन करते समय मरियम मकानी की 'चमकती भौहों' से निकलते रहस्यमयी प्रकाश की चर्चा करता है। वह यह भी जानकारी देता है कि ज्योतिषियों द्वारा हमीदा बानो को अपने प्रसव में कुछ विलंब करने की सलाह दी गई थी। या, वह यह वर्णन करता है कि 'महामहिम अपनी श्रेष्ठ स्मृति के प्रताप से एक वर्ष की उम्र से ही अपने जीवन की समस्त घटनाओं को विस्तार और संपूर्णता में याद रखते हैं' (निज़ामी 1982: 151)। अबुल फ़ज़ल वर्णन करता है कि 'अकबर के व्यक्तित्व के चमत्कार तथा भाग्य से' गुजरात में बाढ़ग्रस्त महेंद्री नदी पार करने योग्य बन गई।

अक्सर जब अबुल फ़ज़ल अकबर के कुछ कृत्यों का बचाव करना मुश्किल पाता है तब वह अपने शब्दों की दार्शनिक कलाबाज़ी के आवरण में उन्हें ढकने का प्रयास करता है। माहम अनगा के द्वारा अधम ख़ान के कब्ज़े में बाज़ बहादुर के हरम की दो लड़कियों की हत्या का अकबर द्वारा मौन समर्थन के वर्णन के तुरंत बाद ही वह महामहिम की दयावान प्रकृति की प्रशंसा से उसे ढक देता है। इसी प्रकार *महज़र*, जो एक महत्वपूर्ण घोषणा थी, का उल्लेख उसके द्वारा संक्षेप में ही किया गया है, इस दस्तावेज़ का पूरा पाठ केवल बदायूँनी के ग्रंथ से ही जाना जा सकता है। 'अपनी विषय-वस्तु पर विचार का उसका रवैया अत्यंत आत्मनिष्ठ है बजाय कि वस्तुनिष्ठ होने के। उसके द्वारा प्रयुक्त पदबंधों (phrases) तथा विशेषणों और वाक्यों का उसका विन्यास किसी खास घटना या स्थिति के संबंध में उसके स्वयं के आकलन और मूल्यांकन के ही इर्द-गिर्द रचा गया है' (सिद्दीकी 2018: 144)।

बादशाह उसके लेखन के इतना अधिक केंद्र में है कि सभी कुछ अच्छा उसी से उत्पन्न होता है और इस प्रक्रिया में उसके समय के कुछ महान् व्यक्तियों, जैसे टोडरमल और शाह मंसूर, के कार्य पूरी तरह से उपेक्षित रह जाते हैं।

अबुल फ़ज़ल अकबर के प्रति बिना शर्त निष्ठा रखता था। निज़ामी (1982: 156) कहते हैं कि इस प्रक्रिया में अबुल फ़ज़ल के '*अकबरनामा* में सरकारी प्रकाशन वाली समस्त ख़ामियाँ हैं ... यह अकबर के चरित्र को अलंकृत करता है और उसके शत्रुओं को स्याह रंग में रंगता है। शुरुआत से लेकर अंत तक यह अंतहीन चापलूसी से भरा हुआ है।' कई बार इसका परिणाम तथ्यों के विरूपण में निकलता है, उसने शेरशाह को मात्र एक अफ़ग़ान विद्रोही के रूप में पेश किया है, उसकी उपलब्धियों को छोटा करके दिखाया गया है और हमेशा उसे शेर ख़ान के रूप में संबोधित किया गया है; यूसुफ़ज़इयों के विरुद्ध बीरबल की सेना की जनक्षति को भी उसने ग़लत ढंग से दर्ज किया है; इसी प्रकार 1594-1595 की महामारी और अकाल को कम करके आँका गया है; वह *करोड़ियों* की नियुक्ति और *जागीर* भूमि को *ख़ालिसा* में बदलने के अकबर के प्रयोग की विफलता का वर्णन नहीं करता है। मुग़लों

के विरुद्ध हुए उनके संघर्षों के सिलसिले में उसके वृत्तांत में राजपूतों और अफ़ग़ानों के पक्ष अनुपस्थित मिलते हैं।

14.6 अबुल फ़ज़ल के लेखन में इतिहास के प्रति तार्किक और धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण

अबुल फ़ज़ल का तार्किक दृष्टिकोण उसके द्वारा परंपरागत इस्लामी इतिहास लेखन से हटने में देखा जा सकता है। यद्यपि वह अपने ग्रंथ की शुरुआत अल्लाह की प्रशंसा से करता है, किंतु अन्य इस्लामी इतिहासकारों की तरह वह पैग़ंबर मुहम्मद तथा ख़लीफ़ा का संदर्भ नहीं देता है, इसके बजाय वह आदम का उल्लेख करता है। उसके अनुसार आदम और अकबर के बीच 52 पीढ़ियाँ गुज़री थीं, हालांकि वह केवल 26 को दर्ज करता है। इस प्रकार वह अकबर को एक इस्लामी शासक की तरह नहीं, बल्कि मानवता के शासक के रूप में पेश करता है। उसका वर्णन मानवता के जन्म (आदम) से शुरू होता है और उसके वर्णन में अकबर 'मानवता' के 'चरम' के रूप में अभिव्यक्त हुआ है।

अबुल फ़ज़ल इस्लाम धर्म को व्यक्त करने के लिए *अहमदी केश* (मुहम्मद का पंथ) शब्द का भी प्रयोग करता है, उसके लिए, 'इस्लाम संस्कृति का एकमात्र स्रोत नहीं था और धर्म के अलावा, चाहे वह इस्लाम हो या अन्य, मानव-विचार और सभ्यता में योगदान देने वाले और भी अन्य धर्मनिरपेक्ष स्रोत थे' (मुखिया 2017: 87)। अबुल फ़ज़ल दृढ़तापूर्वक *तक़लीद* (परम्परा) को खारिज करता है। उसके लेखन में अनवरत रूप से तर्क की दलील नज़र आती है। वह अपने समय की यथार्थ भावना को पकड़ पाने में असफल भले ही रहा हो, किंतु 'उसके अलावा, कोई भी ऐसा मध्यकालीन इतिहासकार नहीं है जो इतिहास के प्रति तार्किक और धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण का दावा कर सके' (सिद्दीक़ी 2018: 130)। उसने स्वयं को पूरी तरह से 'मुस्लिम शासकों की उपलब्धियों' के वर्णन से अलग कर लिया था और न ही 'अतीत की इस्लामी शक्तियों से कोई संबंध स्थापित करने का' प्रयास किया; उसके लिए मुग़ल साम्राज्य एक 'हिंदुस्तानी साम्राज्य' था। इसमें साम्राज्यिक योद्धाओं को *मुजाहिदीन-ए इस्लाम* या *ग़ाज़ियान-ए इस्लाम* के रूप में संबोधित नहीं किया गया था, बल्कि *मुजाहिदीन-ए इक़बाल* और *ग़ाज़ियान-ए दौलत* पुकारा गया था।

अबुल फ़ज़ल तर्क (*अक़्ल, माकूलियत*) को *तक़लीद* (परम्परा) के ऊपर तरज़ीह देता है। अपनी *मुनाजात* में अबुल फ़ज़ल ईश्वर से याचना करता है, 'उन्हें ज्ञान दो जो *तक़लीद* में क़ैद हैं, ऐसे अंधकार में डूबे लोग जो अपनी दृष्टि खो चुके हैं कि वे सत्य की राह (*राह-ए हक़*) देख सकें', 'मेरे हृदय को *तहक़ीक़* से बाँधो; मुझे *तक़लीद* की क़ैद से मुक्त रखो' (रिज़वी, मुखिया 2020: 61 में उद्धृत)। अबुल फ़ज़ल अकबर को यह कहते हुए उद्धृत करता है:

> तर्क के अनुसरण (*अक़्ल पज़ोही*) का विषय और परंपरावाद को नकारना अत्यंत स्पष्ट है कि इसे मेरी पुष्टि की आवश्यकता नहीं है। अगर परम्परा (*तक़लीद*) को इतना ही श्रेष्ठ माना जाता तो सभी पैग़ंबरों ने पुरानी रीतियों का ही अनुकरण किया होता। **हबीब 1998: 335**

अबुल फ़ज़ल में तर्क तथा धर्म के बीच द्वैधाभास देखने को मिलता है, मुखिया कहते हैं कि अबुल फ़ज़ल का तर्क सार्वभौमिक ईश्वर बनाम पंथीय ईश्वर; सार्वभौमिक धार्मिकता बनाम पंथीय धर्मों में अंतर्बद्ध था। '*सुलह-ए कुल* इस तार्किकता का निचोड़ था' (मुखिया 2020: 60)।

परिस्थितियों ने अबुल फ़ज़ल को एक बौद्धिक विद्रोही में बदल दिया था, वह बारंबार बौद्धिक स्वतंत्रता के लिए प्रयासरत रहता था, अबुल फ़ज़ल के 'मूलगामी तार्किक दृष्टिकोण की बाद के इतिहासकारों द्वारा प्रशंसा की गई है किंतु उसके बाद की कुछ शताब्दियों में उसे स्वीकारने वाले कुछ ही थे' (मुखिया 'टाइम': 14)।

बोध प्रश्न-2

1) अपनी महान् कृति *अकबरनामा* की रचना में अबुल फ़ज़ल द्वारा किस प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया था?

.....

.....

.....

2) क्या आप इस बात से सहमत हैं कि अबुल फ़ज़ल का *अकबरनामा* पूर्वाग्रहों से भरा हुआ है?

.....

.....

.....

3) किस सीमा तक अबुल फ़ज़ल को एक वास्तविक धर्मनिरपेक्ष इतिहासकार कहा जा सकता है?

.....

.....

.....

14.7 अबुल फ़ज़ल के लेखन में समय की अवधारणा

इस्लामी विद्वानों के लिए लगभग समान रूप से हिजरी संवत् का समान महत्व रहा है, उनका यह मानना है कि हिज्र की शुरुआत अज्ञानता (*जहालियत*) के अंत का प्रतीक है और नए युग की शुरुआत इस्लाम की रोशनी में हुई थी। लेकिन अबुल फ़ज़ल भिन्न ऐतिहासिक समय के साथ काम करता है, उसका ऐतिहासिक समय आदम से अविरल प्रवाहित होता है। इस्लामी धर्म-विज्ञान में समय 'शाश्वत' है इसके साथ ही इस्लाम में आदम से लेकर क़यामत के दिन तक गतिमान रहने वाले रैखिक समय (linear time) की ईसाई अवधारणा को भी अपनाया गया है, मुहम्मद के समय तक पैग़ंबरों के चक्रीय रूप से आगमन की संकल्पना के साथ। हालांकि हिजरी संवत ऐतिहासिक समय की शुरुआत करता है। लगभग सभी इस्लामी इतिहासों को हिजरी संवत में दर्ज किया गया है। तथापि अबुल फ़ज़ल समय की कई अवधारणाओं को स्वीकार करता है। उसके अनुसार, 'यह शत्रुओं के लिए आनंद और प्रियजनों के लिए पीड़ा के दिन के साथ शुरू होता है' (मुखिया 'टाइम': 7)। उसने इलाही संवत के प्रयोग को स्वीकार किया है जिसे फ़तउल्लाह शिराज़ी द्वारा अकबर के 28वें राज्य-वर्ष में गढ़ा गया था किंतु इसका प्रयोग अबुल फ़ज़ल द्वारा अकबर के राज्य काल की शुरुआत से ही किया गया था।

अबुल फ़ज़ल के समय के विचार के संबंध में एक अन्य महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि उसने विश्व की घटनाओं को उनके कालक्रम में एक ठोस समय रेखा पर निश्चित किया है। उसके लिए, कश्मीर में 4109 वर्ष, 11 महीने और 9 दिनों तक 191 शासकों ने शासन किया। कश्मीर में अकबर के प्रवास को सटीक संख्या में, अर्थात, 3 महीने और 29 दिन के रूप में दिखाया गया है और इसी तरह *अकबरनामा* इस प्रकार की सटीक समय-रेखा के उदाहरणों से भरा है। इस प्रक्रिया में यद्यपि वह कभी-कभी मिथकीय समय को ऐतिहासिक समय के साथ मिला देता है। *महाभारत* का समय-काल हिंदू समय-अवधारणा के आधार पर उसके द्वारा सटीक तिथियों के रूप में परिभाषित किया गया है, अकबर के 40वें राज्य-वर्ष से 2355 वर्ष, 5 महीने और 27 दिन पहले इसके समय की उसके द्वारा गणना की गई है।

14.8 धर्म के संबंध में अबुल फ़ज़ल के विचार

अकबर के प्रति अबुल फ़ज़ल की 'श्रद्धा ने उसे अकबर के धार्मिक विचारों का अनुयायी बनाया होगा।' अबुल फ़ज़ल ने धर्म को राजनीति से मिलाने का प्रयास किया है। उसके द्वारा '*फ़र्र-ए इज़दी* (दैवीय प्रकाश) के विचार का प्रतिपादन राजा को ईश्वर के करीब लाता है। इस प्रकार यद्यपि संप्रभु शासक किसी धर्म का उत्पाद नहीं था, किंतु उसके पास ईश्वर से प्राप्त अधिकारिता थी' (हबीब 1998: 333)।

'अबुल फ़ज़ल एक प्रश्न का उत्तर देना... चाहता था... भारत में विभिन्न धर्मों के बीच झगड़ों तथा ग़लतफ़हमियों के क्या कारण हैं?' (निज़ामी 1982: 147)। भारत के धर्मों के खंड में वह इसका उत्तर इस प्रकार देता है: क) भाषाओं की विविधता; ख) लम्बी दूरियाँ; ग) चिंतन के प्रति लोगों का 'आलस्य'; घ) रीतियों के प्रति निष्ठा; ङ) वैमनस्य तथा उत्पीड़न। अबुल फ़ज़ल का विश्वास था कि यह शासकों की उदासीनता थी जो इसके लिए ज़िम्मेदार थी।

जब अकबर के द्वारा इलाही संवत की शुरुआत को आलोचना झेलनी पड़ी तब 'अबुल फ़ज़ल ने अज्ञानी लोगों की "अल्पदृष्टि" पर क्षोभ प्रकट किया था जो संवत के चलन को धर्म से अलग न हो सकने वाला समझते थे' (निज़ामी 1982: 152)। लेकिन, जहाँ वह सभी से धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण के अनुसरण की आशा करता था, वहीं उसने बादशाह को धर्मपरायण व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया था।

अबुल फ़ज़ल राजा का सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्य सभी धर्मों का समान आदर मानता है। वह टिप्पणी करता है, 'वह (बादशाह) शाही प्रतिष्ठा का हक़दार नहीं होगा यदि वह मानवता की सभी परिस्थितियों और सभी धर्मों के पंथों को अपने अनुग्रह हेतु एकसमान दृष्टि से नहीं देखता है, और उसे कुछ लोगों के साथ मातृवत् व्यवहार तथा अन्य के साथ सौतेली माँ जैसा व्यवहार नहीं करना चाहिए' (शर्मा 1948: 46)।

उसका यह मानना था कि बिना हिंदू साहित्य, दर्शन तथा धर्म को समझे समकालीन राजनीतिक तथा सांस्कृतिक विकासक्रमों को समझना मुश्किल होगा। *आईन-ए अकबरी* में भारतीय दर्शन तथा धर्म पर अलग से एक पूरा खंड रखने का यही मुख्य कारण था। यद्यपि, इस संबंध में उसने अल-बिरूनी से बहुत कुछ ग्रहण किया था।

जिस ईश्वर का वह आह्वान करता है वह कोई 'सीमित' ईश्वर नहीं है। वह उनका उपहास करता है जो उपासना के लिए मंदिर तथा मस्जिद में जाते हैं तथा उपासना स्थलों का निर्माण करते हैं।

14.9 अबुल फ़ज़ल का *सुलह-ए कुल* की अवधारणा

अबुल फ़ज़ल का अकबर के प्रति विशिष्ट पक्षपात उसके समस्त लेखन में प्रकट होता है। तथापि, जहाँ उसने अकबर को मानवता तथा करुणा के व्यापक परिप्रेक्ष्य में ऊँचा उठाने में दक्षता दिखाई है वह है उसका 'निरपेक्ष शांति' (*सुलह-ए कुल*) का विचार। इब्न अल-अरबी के राजनीतिक दर्शन का अनुसरण करते हुए और इसे मुस्लिमों के लिए उच्चतर श्रेष्ठता तथा सुख के लिए रहस्यवादी (सूफ़ी) विचारधारा से मिलाते हुए, अबुल फ़ज़ल ने 'सबके लिए सुख' (happiness of all) की वकालत की थी। अबुल फ़ज़ल वैराग्य/संन्यास को दया/मानवता से नीचे रखता है, और ज़ोर देता है कि 'वैराग्य/संन्यास केवल उसका लाभ करता है जो इसका अभ्यास करता है लेकिन सेवा के माध्यम से व्यक्ति बड़ी संख्या में लोगों का उद्धार कर पाता है' (रिज़वी 1975: 372)। अबुल फ़ज़ल के मत में, 'शासक के लिए, *सुलह-ए कुल* का तात्पर्य सभी धर्मों तथा अन्य भिन्नताओं के प्रति सहिष्णुता की नीति से था' (हबीब 1998: 334)।

अबुल फ़ज़ल अन्य इस्लामी लेखकों के इस्लाम (आस्था) बनाम कुफ़्र (विधर्म) के विचार के खिलाफ़ था। इसके बजाय उसकी विचारधारा सामंजस्य तथा निरपेक्ष शांति (*सुलह-ए कुल*) पर आधारित थी। अबुल फ़ज़ल ने खुले रूप से घोषणा की थी, 'इस आलम के मालिक (अकबर) *सुलह कुल* पर आधारित नियमों से शासन करते हैं'।

अबुल फ़ज़ल कहता है, 'सत्य (हक्क़) की खोज के साथ इस दुनिया के मालिक (अकबर) ने *सुलह-ए कुल* की चमक से अपने समय के अंधकार को दूर कर दिया है तथा मानवता के सभी पंथ परस्पर वैमनस्य की भावना से दूर होकर सामंजस्य के साथ रहते हैं' (मुखिया 2020: 57)।

14.10 अबुल फ़ज़ल की संप्रभुता की अवधारणा

अबुल फ़ज़ल राजा के ईश्वर की छाया (*ज़िल अल-अल्लाह*) होने के परम्परागत विचार से *फ़र्र-ए ईज़दी* (ईश्वर से प्रकट हुआ दैवीय प्रकाश) की ओर जाता है। वह टिप्पणी करता है, 'राज्याधिकार ईश्वर से निकलता हुआ प्रकाश है, सूर्य से निकली हुई एक किरण है, जो दुनिया को प्रकाशमान करती है' (शर्मा 1948: 44)।

उसके लिए राजत्व कोई आवश्यक बुराई नहीं है, इसके बजाय उसका मानना था कि 'राज्याधिकार से उच्चतर कोई प्रतिष्ठा नहीं है'। उसके लिए *पादशाह* 'स्थायित्व तथा अधिकार' का स्वामी है (*पाद* =स्थायित्व तथा अधिकार; *शाह*=स्वामी)। नसीरुद्दीन तूसी की तरह, जो सदाचार और अनाचार वाली सरकारों/शासनों के विषय में बात करता है, अबुल फ़ज़ल भी सच्चे और स्वार्थमुक्त शासकों का पक्ष लेता है। अबुल फ़ज़ल ने *इंसान-ए कामिल* के दर्शन की वकालत की और उसके लिए अकबर

न केवल अपने उदार स्वभाव के कारण, बल्कि उस पर दैवीय प्रकाश की अनुकम्पा के कारण भी एक परमश्रेष्ठ इंसान था। अकबर की पूर्वज परम्परा को मिथकीय मंगोल पूर्वज अलान कुआ (अलंकुआवा), जो 'प्रकाश-पुंज' के हस्तक्षेप से गर्भ में आए थे, के साथ जोड़ते हुए, इस प्रकार वह शाही सत्ता के दैवीय आधार का औचित्य पेश करता है। अबुल फ़ज़ल का *इंसान-ए कामिल* का विचार सीधे तौर पर इब्न अल-अरबी से लिया गया है। यद्यपि, जहाँ इब्न अल-अरबी के लिए *इंसान-ए कामिल* पैग़म्बर मुहम्मद थे, अबुल फ़ज़ल के लिए वह अकबर था।

अबुल फ़ज़ल, निज़ाम-उल मुल्क तूसी तथा ग़ज़ाली की तरह ही, न्याय को सर्वप्रमुख गुण मानता है। नसीरुद्दीन तूसी की *अख़लाक-ए नासिरी* 'सार्वभौमिक न्याय' के सिद्धांत पर भी बल देती है। वह इस पर बल देता है कि राजा को यह देखना चाहिए कि 'उसके राज्य के भीतर कोई अन्याय न होने पाए'।

अबुल फ़ज़ल कहता है 'राजत्व ईश्वर का उपहार है ... और इस उच्च प्रतिष्ठा को प्राप्त करने के बाद भी यदि वह सर्वकालिक निरपेक्ष शांति (*सुलह-ए कुल*) की स्थापना न करे और मानवता के सभी समूहों तथा सभी धर्म-पंथों को समान कृपा-दृष्टि और उदारता से न देखे ... तो वह इस उच्चतर प्रतिष्ठा के योग्य न होगा' (मुखिया 2020: 58)।

अबुल फ़ज़ल 'कल्याणकारी राज्य' की धारणा में विश्वास करता हुआ भी प्रतीत होता है, जिसमें हर किसी का बराबरी का हिस्सा हो तथा जीवन यापन के लिए पर्याप्त रोजगार हों। 'उसे विभिन्न वर्गों की आय तथा व्यय पर बारीकी से नज़र रखनी चाहिए, और परिष्कृत निगरानी के साथ, जो उसके प्रशासन को सम्मानित आभा में दर्शाए। अमीरों को जितना उनके उपभोग के लिए आवश्यक है उससे अधिक नहीं लेना चाहिए ... बेकार बैठे लोगों को उसे किसी प्रकार की दस्तकारी में लगाना चाहिए ... और नागरिकों को परस्पर सहयोग के संकल्प में जोड़ना चाहिए, और उन्हें आपसी सुख-दुःख में समान भागीदारी की डोर में बांध देना चाहिए' (शर्मा 1948: 48)।

बोध प्रश्न-3

1) समय के संबंध में अबुल फ़ज़ल की अवधारणा का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

2) भारत के धर्मों के प्रति अबुल फ़ज़ल का विश्लेषण तथा धर्म के प्रति उसका दृष्टिकोण क्या था?

.....

.....

.....

3) अबुल फ़ज़ल की *सुलह-ए कुल* की अवधारणा क्या है? क्या आप इससे सहमत हैं कि *सुलह-ए कुल* के माध्यम से अबुल फ़ज़ल अकबर को 'मानवतावादी' के रूप में पेश करने का प्रयास कर रहा था?

.....

.....

.....

14.11 सारांश

अबुल फ़ज़ल अपने समय के महानतम इतिहासकारों में से एक था। उसने इतिहास लेखन की नई तकनीकों को ईजाद किया जिसमें फ़ारसी, अरबी और भारतीय दृष्टिकोणें का मिश्रण था। उसकी *अकबरनामा* को उस काल में रचित सर्वाधिक धर्मनिरपेक्ष इतिहास कहा जा सकता है। यद्यपि अकबर के प्रति उसकी व्यक्तिगत श्रद्धा और अकबर को 'परमश्रेष्ठ इंसान' (*इंसान-ए कामिल*) के रूप में पेश करने के निश्चय के कारण उसकी रचना सामान्यतः एक प्रशस्ति/स्तुतिगान के रूप में प्रतीत होती है। इस प्रक्रिया में, या तो उसने कुछ तथ्यों के महत्व को कम कर दिया या ऐसे तथ्यों को छोड़ दिया जो अकबर को 'श्रेष्ठतम बादशाह' के रूप में पेश करने की योजना से मेल नहीं खाते थे। अकबर

तथा उसकी उपलब्धियों पर अत्यधिक केंद्रित रहने के कारण वह समाज का समग्र चित्र निरूपित करने में असफल रहा है, या कहें कि वह 'अपने युग की यथार्थ भावना' को पकड़ पाने में असफल रहा है।

14.12 शब्दावली

महदवी

इस्लामी सहस्राब्दिक/मसीहाई मत। मुस्लिम मसीहा को *महदी* (मार्गदर्शक) कहा जाता है। कुछ सुन्नी परम्पराओं में पैग़म्बर के उत्तराधिकारी ख़लीफ़ाओं को भी *महियिन* कहा गया है। तब से *महदी* होने के दावे की परम्परा चलती रही है। फ़िरोज़ शाह तुग़लक़ के शासनकाल के दौरान (1351-1388) रुक्न ने स्वयं को *महदी* घोषित किया किंतु उसका त्रासद अंत हुआ। 1495-96 में अपनी मक्का यात्रा के दौरान सैय्यद मुहम्मद जौनपुरी ने स्वयं को *महदी* घोषित किया। इसके कारण उसे *उलमा* का व्यापक प्रतिरोध झेलना पड़ा। लेकिन, अकबर ने महदवियों को पूरी स्वतंत्रता दे रखी थी। महदवी यह मानते थे कि अल्लाह ने सैय्यद मुहम्मद जौनपुरी को इस्लाम को इसके मौलिक शुद्ध रूप में स्थापित करने के लिए भेजा है

वाहिदिया/नुक़्ताविया

हुरूफ़ी आंदोलन की एक शाखा के रूप में नुक़्तावी आंदोलन महमूद पासिख़ानी द्वारा स्थापित किया गया था। उसने स्वयं को 1397 में एक *महदी* घोषित किया। उसने हुरूफ़ी मत से बहुत कुछ ग्रहण किया था। ब्रह्मचर्य पर अपने बल के कारण उन्हें *वाहिदिया* भी कहा जाता था। एक ब्रह्मचारी *वाहिद* के दर्जे तक उठता था, इसलिए इन्हें वाहिदिया कहा जाता था

इशराक़ी परम्परा

इशराक़ी का अर्थ है, उदित होना या रोशन होना। इस्लामी दर्शन का इशराक़ी (रोशन) मत शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी द्वारा 12वीं शताब्दी में स्थापित मत एक सूफी मत है

14.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1) देखें भाग 14.1

2) देखें भाग 14.1

3) देखें भाग 14.3

बोध प्रश्न-2

1) देखें भाग 14.4

2) देखें भाग 14.5

3) देखें भाग 14.6

बोध प्रश्न-3

1) देखें भाग 14.7

2) देखें भाग 14.8

3) देखें भाग 14.9